विचार बिन्दु

जो वस्तु आनंद प्रदान नहीं कर सकती, वह सुन्दर हो ही नहीं सकती। –प्रेमचंद

मैक्सवेल ने दिखाया, कुछ भी नामुमकिन नहीं है

बचपन में पढ़ा था कि नेपोलियन के शब्दकोष में 'इंपॉसिबल' नाम का कोई शब्द नहीं है। बाद में यह भी बताया गया कि 'इंपॉसिबल' का अर्थ 'आई एम पॉसिबल' भी हो सकता है। इस बारे में जब कभी बात चलती है तो सामान्यतया यही सुना जाता है 'यह तो हमसे नहीं हो पाएगा' या 'यह तो संभव ही नहीं है' और लोग प्रयास तक करना छोड़ देते हैं।

इतिहास ने कई बार सिद्ध किया है कि कुछ भी असंभव नहीं है। मानव क्षमता असीमित है और जितना प्रयास करते हैं, वह उतनी और बढ़ जाती है। ऐसे उदाहरण कई बार देखने को मिले हैं, जहां बिल्कुल अप्रत्याशित रूप से लोग घोर संकट से निकलकर, शिखर तक पहुंचे हैं। आजकल जब इस प्रकार की बात की जाती है, विशेष कर भारत के युवाओं के साथ, तो अपनी अकर्मण्यता का सबसे बड़ा बहाना यह बताया जाता है कि क्या करें यह हमारे लिए संभव ही नहीं है। इसी मनोवृत्ति के कारण देश के युवा अपना शत प्रतिशत प्रयास भी नहीं करते।

इस मनोवृत्ति के ठीक विपरीत, हाल ही में अफगानिस्तान और ऑस्ट्रेलिया के विश्व कप क्रिकेट मैच में ऑस्ट्रेलिया के ग्लेन मैक्सवेल ने सिद्ध कर दिखाया है कि कुछ भी नामुमकिन नहीं है। ऑस्ट्रेलिया की टीम पांच बार विश्व कप विजेता रही है और अफगानिस्तान की टीम इस विश्व कप में सबसे कमजोर टीमों में से एक थी। अफगानिस्तान ने अपने जुझारूपन, टीम भावना और अपने मनोबल के आधार पर तीन पूर्व विश्व विजेताओं श्रीलंका, इंग्लैंड और पाकिस्तान को मात देकर सबको आश्चर्यचकित कर दिया था। ऐसा लगने लगा था कि वह इस बार विश्व कप के सेमीफाइनल में स्थान पा लेगी। उनके 2 मैच ऑस्ट्रेलिया और साउथ अफ्रीका के विरुद्ध शेष थे। यदि वह यह दोनों मैच जीत लेते तो उनका सेमीफाइनल में प्रवेश निश्चित था। जब ऑस्ट्रेलिया के साथ मैच प्रारंभ हुआ तो सब यही मानकर चल रहे थे कि ऑस्ट्रेलिया के पास, जिस प्रकार के दिग्गज खिलाड़ी हैं, वह बड़ी आसानी से अफगानिस्तान को हरा देगा । ऐसा प्रारंभ में लगा भी, जब अफगानिस्तान ने अविश्वसनीय बल्लेबाजी करते हुए पांच विकेट पर 291 रन बना लिए। इसमें इब्राहीम ज़रदान का एक अविजित शतक भी शामिल था। तब भी यह लगा था कि ऑस्ट्रेलिया, क्योंकि पांच बार विश्व चैंपियन टीम रही है, उसके लिए इस स्कोर से अधिक रन बनाना असंभव कार्य नहीं था और ऐसा लगता था कि वह इस स्कोर को आसानी से पार कर सकते हैं। जब ऑस्ट्रेलिया की पारी की शुरुआत हुई तो उन्होंने एक के बाद एक सभी महारथी विशेषज्ञ बल्लेबाजों को लगातार खोना प्रारंभ कर दिया और एक समय ऐसा आया जब ऑस्ट्रेलिया के सात प्रमुख बल्लेबाज कुल 91 रन के स्कोर पर पवेलियन लौट चुके थे। इनमें वार्नर, मार्श, स्टोनियस शामिल थे। मैक्सवेल उस समय खेल रहा था और उसे भी 30 के स्कोर पर जीवनदान मिल चुका था। यहां यह उल्लेखनीय है कि मैक्सवेल हाल ही में भयंकर मानसिक अवसाद के दौर से गुजरा है और कुछ दिनों उनका प्रदर्शन खराब रहा था। ऐसा लगा कि अब तो यह मैच अफगानिस्तान की झोली में आ ही गया है। अफगानिस्तान के समर्थक और खिलाड़ियों ने इस अप्रत्याशित जीत का जश्न, मैदान के अंदर और बाहर मनाना प्रारंभ कर दिया । यहीं से मैक्सवेल ने ऑस्ट्रेलिया के कप्तान कमिंस के साथ ऑस्ट्रेलिया की पारी को संवारने और संभालने का काम प्रारंभ किया। कमिंस एक गेंदबाज है एवं उनसे बल्लेबाजी की अपेक्षा नहीं थी। इसके बाद जिस प्रकार के खेल का प्रदर्शन मैक्सवेल ने किया, क्रिकेट के इतिहास में कभी नहीं देखा गया। उसकी अद्भुत पारी ने इसे एक दिवसीय क्रिकेट के इतिहास का सर्वश्रेष्ठ मैच बना दिया। जिस पिच पर ऑस्ट्रेलिया के 7 दिग्गज बल्लेबाज 91 रन पर आउट हो गए हों, उसी पर मैक्सवेल ने लगातार चौकों और छक्कों की बारिश करते हुए 157 की स्ट्राइक रेट से अविजित 201 रन बनाए और आठवें विकेट के लिए 200 रन की अविजित साझेदारी की। मैक्सवेल ने यह रन बनाने में 21 चौके और 10 छक्के लगाए। यह दोनों ही विश्व कप के क्रिकेट इतिहास के लिए एक रिकॉर्ड बन गए। रिकॉर्ड तो वैसे भी विश्व कप में बनते रहे हैं किंतु मैक्सवेल की पारी और उससे मिली सीख का उल्लेख करना उपयुक्त होगा।

मानसिक एवं शारीरिक रूप से अस्वस्थ होने के बाद भी मैक्सवेल ने जिस प्रकार हिम्मत नहीं हारी और लगातार मैदान पर डटा रहा, वह एक यादगार पारी बन गई। वास्तव में यह बात सिद्ध हुई है कि असंभव कुछ भी नहीं है। यदि मैक्सवेल हार मान कर बैठ जाता तो ऑस्ट्रेलिया की पारी कभी की समाप्त हो जाती और वह मैच हार जाता । उसने न केवल स्वयं पर विश्वास रखा अपितु विपरीत शारीरिक और मानसिक परिस्थितियों के बावजूद, अपनी संकल्प शक्ति को बनाए रखा और अपने लक्ष्य की ओर निरंतर बढ़ता रहा। जिन करोड़ों लोगों ने यह मैच देखा उनमें से शायद ही किसी ने सोचा होगा कि अफगानिस्तान यह मैच हार जाएगा और ऑस्ट्रेलिया इसमें तीन ओवर शेष रहते हुए यह मैच जीत लेगा। यह जीत इसलिए अधिक महत्वपूर्ण है कि मैक्सवेल ने अकेले अपने बलबूते पर ही यह मैच, ऑस्ट्रेलिया के लिए जीता।

कहा जाता है कि एक अकेला व्यक्ति क्या कर लेगा? मैक्सवेल ने दिखा दिया कि यदि एक व्यक्ति भी ठान ले तो, वह स्थितियों को काबू में करके उन्हें अपने पक्ष में ढाल सकता है। इसके पीछे सोच यही है कि आप यदि प्रयास ही नहीं करेंगे तो वैसे ही कुछ नहीं होना है, किंतु यदि पूरा प्रयास करें, तो संभावना है कि आप अपने लक्ष्य की ओर एक कदम आगे बढ़ा सकें।

कहा जाता है कि एक अकेला व्यक्ति क्या कर लेगा? मैक्सवेल ने दिखा दिया कि यदि एक व्यक्ति भी ठान ले तो, वह स्थितियों को काबू में करके उन्हें अपने पक्ष में ढाल सकता है। इसके पीछे सोच यही है कि आप यदि प्रयास ही नहीं करेंगे तो वैसे ही कुछ नहीं होना है, किंतु यदि पूरा प्रयास करें, तो संभावना है कि आप अपने लक्ष्य की ओर एक कदम आगे बढ़ा सकें।

मैक्सवेल की इस पारी से एक बात यह भी सिद्ध होती है कि सही दिशा में कार्य करने पर, एक व्यक्ति का प्रयास भी महत्वपूर्ण होता है। एक ही व्यक्ति स्थिति को बदलने में सक्षम हो सकता है। आसाराम को बलात्कार के आरोप में सजा दिलाने के लिए सारी विपरीत परिस्थितियों और अत्यधिक दबाव के बावजूद जोधपुर के एक वकील श्री सोलंकी ने अपने कानूनी ज्ञान और नैतिक मनोबल के आधार पर प्रयास जारी रखा । अंततः आसाराम को न केवल बलात्कार का दोषी पाए जाने पर सजा हुई अपितु अब तक उसकी जमानत भी संभव नहीं हो पाई है। इस पर एक अच्छी फिल्मी 'एक ही बंदा काफी है' बनी, जो प्रभावशाली थी। मैक्सवेल ने सिद्ध किया कि मैच जीतने के लिए भी एक ही बंदा काफी है। एक ही बंदा, नामुमकिन को मुमकिन बना सकता है। बस, आवश्यकता है इच्छा शक्ति की, मनोबल ऊंचा बनाए रखने की और विपरीत परिस्थितियों में हार नहीं मानने की।

कई और बातें भी अफगानिस्तान-ऑस्ट्रेलिया के इस मैच से सामने आती हैं और एक प्रकार की सीख हमें देती हैं । एक तो यह कि किसी भी विरोधी या शत्रु को कभी कमजोर नहीं समझना चाहिए। पहले ऑस्ट्रेलिया ने यह गलती की और वे हार के कगार तक पहुंच गए। अफगानिस्तान के 291 रन के जवाब में अपने सात विकेट 91 रन पर ही गवा दिए। सीख यही है कि कभी भी अपने विरोधी को कमजोर मत समझिए। पता नहीं कब उसे मौका मिले और वह वार कर दे। कहा भी गया है कि '100 सुनार की, एक लोहार की'।

दूसरी सीख है, कभी भी लक्ष्य प्राप्त होने तक अपने प्रयासों को कम नहीं करना चाहिए। जब अफगानिस्तान ने 91 रन पर ऑस्ट्रेलिया के सात खिलाड़ी आउट कर दिए तो वह यह मान बैठे कि उनकी जीत हो गई है । इसका संकेत दर्शक दीर्घा में अफ़गानियों द्वारा किए जा रहे डांस से मिल रहा था। मैदान पर भी अफगानिस्तान के खिलाड़ियों के अति आत्मविश्वास से यह स्पष्ट हो रहा था। जैसे-जैसे समय बीतता गया, बाज़ी उनके हाथ से निकलती गई और अंततः वे मैच ही हार बैठे। सीख यह कि, किनारे पर पहुंचने के बाद ही चैन की सांस लेनी चाहिए, बीच में नहीं। कई बार देखा है कि लंबी दौड़ में जो खिलाड़ी कई बार पीछे होता है वह अंतिम चरण में फर्राटा मार कर दूसरे को पीछे छोड़ते हुए विजय प्राप्त कर लेता है। लक्ष्य पूरा हुए बगैर हमें निश्चिंत नहीं होना है और अपना प्रयास पूरे जोर से जारी रखना है। क्रिकेट के बारे में तो वैसे भी कहा गया है कि जब तक अंतिम गेंद नहीं डाल दी जाय, तब तक खेल समाप्त नहीं होता है। इस मैच ने इसे बहुत अच्छी तरह से सिद्ध किया है।

दो प्रकार के व्यक्ति होते हैं । एक वे, जो विपरीत परिस्थितियों में शीघ्र ही हार मान कर हथियार डाल देते हैं और दूसरे वे, जो संकट के समय पूरे आत्मविश्वास के साथ अपना प्रयास दुगुनी मेहनत से जारी रखते हैं। मैक्सवेल इसी प्रकार का खिलाड़ी रहा जो स्वयं चोटिल होकर दर्द से मैदान पर लेट गया था। वह उसके बावजूद उठ खड़ा हुआ और दौड़ नहीं पाने के कारण एक स्थान पर खड़े-खड़े ही शॉट मारता रहा । मानसिक अवसाद के लंबे दौर से गुजरने के बाद तथा ऑस्ट्रेलिया की टीम के संकट में होने और खुद की चोट के बावजूद उसने अपना धैर्य नहीं छोड़ा, कष्ट की परवाह नहीं की और ऑस्ट्रेलिया को लक्ष्य तक पहुंचा कर ही दम लिया। इस पारी में जिस प्रकार अविजित दोहरा शतक बनाया, वह क्रिकेट के इतिहास में सुनहले अक्षरों में दर्ज हो चुका है। यह रिकॉर्ड टूटना सरल नहीं होगा। जिन करोड़ों दर्शकों ने अफगानिस्तान-ऑस्ट्रेलिया का यह क्रिकेट मैच टी वी पर देखा, वे इसे लंबे समय तक नहीं भूल पाएंगे। यदि इस मैच के आधार पर जो सीख जीवन के लिए मिलती है उसे हम ध्यान में रख सकें, तो हम अपने लक्ष्य की ओर अधिक तेजी से बढ़ सकेंगे, चाहे वह देश हो, समाज हो, परिवार हो, या व्यक्ति।

हमें यह परवाह नहीं करनी है कि दूसरे लोग क्या कर रहे हैं और क्यों नहीं कर रहे हैं? यह सिद्धांत भ्रष्टाचार की समाप्ति पर भी लागू होता है। कई बार अधिकारियों को यह कहते हुए सुना जाता है कि हमारे अकेले के करने से क्या होगा जब सब भ्रष्ट हैं? इसके प्रति उत्तर में यही कहा जा सकता है कि आप नहीं करेंगे तो वैसे भी कुछ नहीं होगा, किंतु यदि आप अपना प्रयास करेंगे तो संभावना बनती है कि कुछ हो जाए। वरना तो वही स्थिति होगी, जब राजा ने नागरिकों से एक-एक लोटा दूध डालने को कहा और सब यही सोच बैठे कि दूसरे तो दूध डालेंगे ही मैं एक लोटा पानी डाल दूं तो क्या फर्क पड़ेगा? परिणाम यह हुआ कि पूरा तालाब केवल पानी से ही भर गया और किसी ने दूध का एक लोटा तक नहीं डाला। अर्थ स्पष्ट है कि कोई भी प्रयास छोटा नहीं होता और कोई भी प्रयास कम नहीं होता। आवश्यकता इसी बात की है कि हम दूसरों द्वारा शुरुआत करने की प्रतीक्षा किए बिना पहला कदम अपने स्तर पर उठा लें। मैक्सवेल ने इसकी कतई परवाह नहीं की कि दूसरे खिलाड़ियों ने क्या किया और किस प्रकार से आउट हो गए? उसने केवल यह सोचा कि उसे टिककर खेलना है और ऑस्ट्रेलिया को जिताना है। बस यही इच्छा शक्ति इस मैच में जीत के लिए जिम्मेदार है।

हमें धन्यवाद दोनों टीमों अफगानिस्तान और ऑस्ट्रेलिया को देना होगा, जिन्होंने इस खेल के माध्यम से न केवल करोड़ों दर्शकों का मनोरंजन किया बल्कि क्रिकेट को भी अधिक समृद्ध बनाया। अफगानिस्तान जो कि विभिन्न प्रकार की विपरीत परिस्थितियों से गुजर रहा है और क्रिकेट में इसकी कोई पहचान नहीं थी, उसने तीन पुराने विश्व कप चैंपियन को हराकर, विश्व स्तरीय क्रिकेट में धमाकेदार तरीके से प्रवेश किया है । आशा है, भविष्य में हम अफगानिस्तान को और श्रेष्ठ प्रदर्शन करते हुए देख पाएंगे।

आज तो हम यही कह सकते हैं, 'सलाम, ग्लेन मैक्सवेल'! आपने सबको यह दिखा दिया कि नामुमकिन को मुमकिन कैसे बनाया जाता है।

–अतिथि सम्पादक,
राजेन्द्र भाणावत
(पूर्व आई.ए.एस. अधिकारी)

"विकसित भारत संकल्प यात्रा" को प्रधानमंत्री मोदी ने रवाना किया

नई दिल्ली। जनजातीय नायक बिरसा मुंडा की जयंती के दिन जनजातीय गौरव दिवस के मौके पर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने झारखंड के खूंटी जिले से विकसित भारत संकल्प यात्रा को हरी झंडी दिखाई। सरकार के प्रमुख कल्याणकारी कार्यक्रमों के संदेश प्रचारित करने वाली 5 विशेष रूप से डिजाइन की गई आईईसी (सूचना, शिक्षा और संचार) वैन खूंटी जिले और आसपास के क्षेत्रों में स्थित बड़ी आदिवासी आबादी वाली विभिन्न ग्राम पंचायतों से रवाना की गई। इसी तरह की आईईसी वैनों को देश भर के बड़ी आदिवासी आबादी वाले 68 जिलों से राज्यपालों, मुख्यमंत्रियों, केंद्रीय मंत्रियों, राज्य मंत्रियों जैसे महत्वपूर्ण गणमान्य व्यक्तियों ने हरी झंडी दिखाकर रवाना किया।

झारखंड के खूंटी जिले से प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने विकसित भारत संकल्प यात्रा को हरी झंडी दिखाई।

- आईईसी वैनों को देश की बड़ी जनजातीय आबादी वाले दूरस्थ इलाकों से रवाना किया गया

जम्मू-कश्मीर में इस संकल्प यात्रा को क्रमशः राजौरी और बांदीपोरा जिलों के बुद्धल और गुरेज इलाकों से रवाना किया गया। समुद्र तल से 8,000 फीट की ऊंचाई पर सर्द हवाओं के बीच स्थानीय लोग, युवा, पंचायत राज संस्थान और सरकारी अधिकारी इस शुभारंभ समारोह में शामिल हुए। उपराज्यपाल मनोज सिन्हा ने वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के जरिए इस कार्यक्रम में हिस्सा लिया। अरुणाचल प्रदेश के राज्यपाल लेफ्टिनेंट जनरल के टी पटनायक (सेवानिवृत्त) ने निचला सुबनसिरी जिले के जाइरो में आईईसी वैनों को हरी झंडी दिखाई। इस औपचारिक शुभारंभ समारोह में पीएम स्वनिधि, पीएम आवास योजना के लाभार्थियों ने भाग लिया। ये आईईसी वैन निचला सुबनसिरी, तवांग और पूर्वी कामेंग जिलों में यात्रा करेंगी और जमीनी स्तर पर सरकार की कल्याणकारी योजनाओं के बारे में जन जागरूकता फैलाएंगी। नागालैंड में यह अभियान दीमापुर जिले के इंडिसेन गांव में शुरू किया गया था। निकटवर्ती असम में बक्सा, कोकराझार और कार्बी आंगलोंग में विकसित भारत संकल्प यात्रा शुरू की गई।

महाराष्ट्र के राज्यपाल रमेश बैस और मुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे आदिवासी जिले नंदुरबार में इस शुभारंभ कार्यक्रम में शामिल हुए। केंद्रीय मंत्री पुरूषोत्तम रूपाला ने गुजरात के दाहोद में कार्यक्रम में भाग लिया, जबकि राज्य के मुख्यमंत्री भूपेन्द्र पटेल ने अंबाजी में वैनों को हरी झंडी दिखाई। केंद्रीय मंत्री बिश्वेश्वर टुडू ने ओडिशा के मयूरभंज जिले से विकसित भारत अभियान वैन को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। आंध्र प्रदेश में इस यात्रा को राज्यपाल एस अब्दुल नज़ीर ने अल्लूरी सीताराम राजू जिले से हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। तमिलनाडु में सूचना और प्रसारण, पशुपालन और मत्स्य पालन राज्य मंत्री डॉ. एल मुरुगन ने नीलगिरि जिले में यह अभियान शुरू किया। केरल के राज्यपाल आरिफ मोहम्मद खान ने पलक्कड़ जिले के अट्टापडी में अभियान शुरू किया। यह अभियान केंद्र शासित प्रदेश लक्षद्वीप के करावत्ती द्वीप पर भी आरंभ किया गया।

कवर किए जाने वाले विषय :-इस यात्रा में मुख्य ध्यान लोगों से संपर्क करने, उनमें जागरूकता पैदा करने और उन्हें स्वच्छता सुविधाएं, आवश्यक वित्तीय सेवाएं, बिजली कनेक्शन, एलपीजी सिलेंडर को सुलभ कराने, गरीबों के लिए आवास, खाद्य सुरक्षा, उपयुक्त पोषण, विश्वसनीय स्वास्थ्य सेवाएं, स्वच्छ पेयजल इत्यादि जैसी कल्याणकारी योजनाओं का लाभ प्रदान करने पर होगा। विकसित भारत अभियान, जोकि अब तक की सबसे बड़ी संपर्क (आउटरीच) पहलों में से एक है, का लक्ष्य अंततः 25 जनवरी 2024 तक देश के हर जिले से गुजरते हुए2.55 लाख से अधिक ग्राम पंचायतों और 3,600 से अधिक शहरी स्थानीय निकायों को कवर करना है।

विश्वविद्यालय के कुलपतियों के प्रकार

प्रो. अशोक कुमार

कुलपति एक विश्वविद्यालय का प्रमुख होता है। कुलपति का पद एक महत्वपूर्ण पद है। वह विश्वविद्यालय के भविष्य को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। विश्वविद्यालय शिक्षा का केंद्र होता है। इसलिए, कुलपति का मुख्य कार्य शिक्षा को बढ़ावा देना होता है। कुलपति विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रमों और कार्यक्रमों की गुणवत्ता में सुधार करने, विश्वविद्यालय के छात्रों और शिक्षकों के लिए एक अनुकूल शैक्षिणक वातावरण बनाने और विश्वविद्यालय को एक प्रतिष्ठित संस्थान बनाने के लिए काम करता है।

कुलपति के इन दायित्वों को पूरा करने के लिए, उसे निम्नलिखित कौशल और योग्यताएं होनी चाहिए:-

नेतृत्वः कुलपति को एक प्रभावी नेता होना चाहिए। उसे विश्वविद्यालय के कर्मचारियों, छात्रों और शिक्षकों का नेतृत्व करने में सक्षम होना चाहिए।

प्रशासनः कुलपति को एक कुशल प्रशासक भी होना चाहिए। कुलपति को विश्वविद्यालय के प्रशासनिक कार्यों को सुचारू रूप से चलाने में सक्षम होना चाहिए। कुलपति को विश्वविद्यालय के संसाधनों का कुशलतापूर्वक उपयोग करने में भी सक्षम होना चाहिए।

प्रबंधनः कुलपति को एक कुशल प्रबंधक होना चाहिए। उसे विश्वविद्यालय के संसाधनों का प्रभावी ढंग से प्रबंधन करने में सक्षम होना चाहिए।

नीति-निर्माणः कुलपति को एक दूरदर्शी नीति निर्माता होना चाहिए। उसे विश्वविद्यालय के भविष्य के लिए प्रभावी नीतियों का निर्माण करने में सक्षम होना चाहिए।

शैक्षणिक मामलोंः कुलपति को एक अनुभवी शैक्षिणक नेता होना चाहिए। उसे विश्वविद्यालय के शैक्षिणक मानकों को बनाए रखने में सक्षम होना चाहिए।

सामाजिक दायित्वः कुलपति को एक जिम्मेदार नागरिक होना चाहिए। उसे विश्वविद्यालय के सामाजिक दायित्वों को पूरा करने में सक्षम होना चाहिए।

भारत में विश्वविद्यालयों में कुलपति की कार्यशैली कुलपति की नियुक्ति के आधार पर निर्भर करती है।

कुलपति मुख्य रूप से पाँच प्रकार के होते हैं:-

प्रशासकीय कुलपतिः ये कुलपति विश्वविद्यालय के प्रशासनिक मामलों पर अधिक ध्यान देते हैं। वे विश्वविद्यालय के विभिन्न विभागों और संकायों के बीच समन्वय बनाए रखने और विश्वविद्यालय की दैनिक गतिविधियों को सुचारू रूप से चलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

शैक्षिणक कुलपतिः ये कुलपति विश्वविद्यालय के शैक्षिणक मामलों पर अधिक ध्यान देते हैं। वे विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रमों और कार्यक्रमों की गुणवत्ता में सुधार करने और विश्वविद्यालय के छात्रों और शिक्षकों के लिए एक अनुकूल शैक्षिणक वातावरण बनाने पर ध्यान केंद्रित करते हैं।

सामाजिक कुलपतिः ये कुलपति विश्वविद्यालय के सामाजिक दायित्वों को पूरा करने पर अधिक ध्यान देते हैं। वे विश्वविद्यालय के आसपास के समुदाय के साथ संबंध बनाने और विश्वविद्यालय के छात्रों को सामाजिक सरोकारों के प्रति जागरूक करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

राजनीतिक कुलपतिः राजनीतिक कुलपतियों की कार्यशैली विश्वविद्यालय के लिए कई चुनौतियों का कारण बन सकती है। उदाहरण के लिए, राजनीतिक कुलपति विश्वविद्यालय के शैक्षिणक और सामाजिक मामलों में कम ध्यान केंद्रित करने के कारण विश्वविद्यालय की गुणवत्ता प्रभावित हो सकती है। इसके अलावा, राजनीतिक कुलपति विश्वविद्यालय के प्रशासन और नीति-निर्माण में अपने राजनीतिक पक्षपात को प्रभावित कर सकते हैं। इससे विश्वविद्यालय में राजनीति और विवाद बढ़ सकता है।

रिश्वतखोर कुलपति : विश्वविद्यालयों में जो कुलपति रिश्वत / धन देने के कारणों से नियुक्त होते हैं, उनकी कार्यशैली आमतौर पर निम्नलिखित प्रकार की होती है:-

वे विश्वविद्यालय के प्रशासन और नीति-निर्माण में व्यक्तिगत लाभ को आगे बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। वे विश्वविद्यालय के संसाधनों का उपयोग अपने निजी हितों को बढ़ावा देने के लिए कर सकते हैं। उदाहरण के लिए, वे अपने परिवार के सदस्यों या दोस्तों को विश्वविद्यालय में नियुक्तियां दिलवा सकते हैं, या विश्वविद्यालय से अनुबंध प्राप्त कर सकते हैं।

इन पाँच प्रकार के अलावा, कुछ कुलपति ऐसे भी होते हैं जो इन श्रेणियों में फिट नहीं होते हैं। ये कुलपति अपनी अनूठी कार्यशैली के कारण पहचाने जाते हैं। उदाहरण के लिए, कुछ कुलपति ऐसे होते हैं जो विश्वविद्यालय के प्रशासनिक और शैक्षणिक दोनों मामलों में समान रूप से ध्यान देते हैं। इन कुलपतियों को समग्र कुलपति कहा जाता है। कुछ कुलपति ऐसे भी होते हैं जो विश्वविद्यालय के सामाजिक और राजनीतिक मामलों में समान रूप से ध्यान देते हैं। इन कुलपतियों को समाज-राजनीतिक कुलपति कहा जाता है।

–प्रो. अशोक कुमार,
पूर्व कुलपति कानपुर, गोरखपुर विश्वविद्यालय, वैदिक विश्वविद्यालय निंबहारा , निर्वाण विश्वविद्यालय जयपुर, अध्यक्ष आईएसएलएस, प्रिसिडेंट सोशल रिसर्च फाउंडेशन , कानपुर

प्याज, लहसून और मटर के भावों में एकाएक तेजी आई

श्रीगंगानगर, (निसं)। इलाके में प्याज, लहसून और मटर के भाव एकाएक दाम बढ़ गए हैं। वहीं अन्य सब्जियों के दाम कम हुए हैं। सब्जी विक्रेताओं ने एकाएक दाम बढ़ा दिए हैं। हालांकि इन कारोबारियों का मानना है कि नई फसल जब तक पककर बाजार में नहीं आती तब तक प्याज और लहसून के दामों में कोई कमी नहीं आएगी। प्याज का स्टॉक अब बाहर निकाला जा रहा है। इधर, होटल, टिफिन सेंटरों और ढाबों पर सलाद में प्याज अब धीरे धीरे गायब होने लगा है। सलाद में अब मूली को प्राथमिकता मिल रही है। मूली आठ रुपए प्रति किलो की दर से रिटेल में बिक रही है।

सब्जी मंडी में प्याज के थोक भाव 48 रुपए और रिटेल भाव 60 से 80 रुपए प्रति किलो रहे। जबकि गत वर्ष इसी सीजन में प्याज के थोक भाव करीब बारह रुपए और रिटेल भाव करीब 20 रुपए प्रति किलो बिक रहा था। यही हाल लहसून का है। लहसून चाइनीज दो सौ रुपए प्रति किलो की दर से बिक रहा था जबकि रिटेल में इसका दाम 230 रुपए प्रति किलोग्राम तक पहुंच गया। लेकिन बाजार में देसी लहसून को ज्यादा पसंद किया जा रहा है। चाइनीज लहसून देखने में साफ और सुंदर दिखता है लेकिन खाने में उतना जायका नहीं है। लेकिन देसी लहसून ज्यादा जायकेदार रहता है।

- होटल, टिफिन सेंटरों और ढाबों पर सलाद में प्याज गायब होने लगा

देसी लहसून सब्जी मंडी में 170 से 180 रुपए प्रति किलो बिका जबकि रिटेल में इसका दाम 240 रुपए तक पहुंच गया है। वहीं मटर भी महंगी दर से बिकने लगी है। मटर थोक में 115 रुपए और रिटेल में 140 से 150 रुपए प्रति किलो की दर से बिकने लगी है।

थोक कारोबारी गौरीशंकर बतरा ने बताया कि प्याज नया और पुराना दोनों तरह का बिक रहा है। अलवर, नासिक, एमपी और मथानिया की सब्जी मंडी से प्याज की आवक हो रही है। दीपावली पर अलवर में चार दिन, एमपी में दस दिन और नासिक में करीब पांच दिन सब्जी कारोबार बंद रहेगा।

सब्जी कार्य में लगी लेबर दीपावली अवकाश के बाद वापस काम पर लौटेगी। ऐसे में दो सप्ताह बाद नई फसल आएगी तो प्याज के दामों में कमी आ सकती है। दो माह पहले बरसात में प्याज की फसल खराब हो गईथी, इस कारण आवक कम होने पर डिमांड ज्यादा रहने पर स्टॉक करने वालों ने प्याज की कीमतों में वृद्धि कर दी। अदरक में भले की कई रोगों को दूर करने का नुस्खा हो लेकिन अदरक के बढ़ते दामों ने ग्राहकों को दर्द जरूर दे दिया है। अदरक बोली में एक सौ रुपए प्रति किलो की दर से बिकी जबकि रिटेल में यह 130 से 140 रुपए प्रति किलोग्राम से बिकने लगी है। सर्दी की आहट होने पर अदरक की डिमांड भी एकाएक बढ़ी है। अदरक की नई फसल अब सब्जी मंडी में आएगी। ज्यादा आवक आते ही इसका दाम कम हो पाएगा।

दो माह पहले अदरक महज चालीस से पचास रुपए प्रति किलो की दर से बिक रही थी। इधर, टमाटर भी अब भाव खाने लगा है। महज बीस रुपए में मिलने वाला टमाटर पचास रुपए तक पहुंच गया है।

राशिफल गुरूवार 16 नवम्बर, 2023

पंडित अनिल शर्मा

कार्तिक मास, शुक्ल पक्ष, तृतीया तिथि, गुरूवार, विक्रम संवत 2080, मूल नक्षत्र रात्रि 2:17 तक, सुकर्मा योग प्रातः 9:59 तक, गर करण दिन 12:35 तक, चन्द्रमा आज धनु राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थितिः सूर्य-तुला, चन्द्रमा-धनु, मंगल-तुला, बुध-वृश्चिक, गुरू-मेष, शुक्र-कन्या, शनि-कुम्भ, राहु-मीन, केतु-कन्या राशि में।

आज रवियोग रात्रि 2:17 तक है। भद्रा रात्रि 11:49 से शुक्रवार दिन 11:04 तक रहेगी। आज मार्गशीर्ष संक्रांति है और सूर्य वृश्चिक में प्रवेश रात्रि 1:19 पर करेगा। मंगल वृश्चिक प्रवेश दिन 10:46 पर करेगा। आज विनायक चतुरथी, दुर्वा गणपति व्रत है। आज से डाला छठ महापर्व तीन का आरम्भ होगा। आज से जमादि-उल अव्वल मु. मास 5 आरम्भ होगा।

श्रेष्ठ चौघड़ियाः शुभ सूर्योदय से 8:11 तक, चर 10:51 से 12:11 तक, लाभ-अमृत 12:11 से 7:52 तक, शुभ 4:12 से सूर्यास्त तक।

राहूकालः 1:30 से 3:00 तक। सूर्योदय 6:51, सूर्यास्त 5:32

मेष
परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। शुभ कार्य के लिए बाहर जाना पड़ सकता है। नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

सिंह
घर-परिवार के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। अतिथियों का आगमन बना रहेगा। परिवार के कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। खान-पान के कारण स्वास्थ्य खराब हो सकता है।

धनु
व्यावसायिक कार्यों के लिए यात्रा संभव है। नौकरीपेशा व्यक्तियों को अतिरिक्त जिम्मेदारी मिल सकती है। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। मानसिक तनाव से राहत मिलेगी।

वृष
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। शुभ कार्यों में व्यवधान सामने आ सकते हैं। नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा। आज आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है।

कन्या
घर-परिवार में सुख-शांति बनी रहेगी। सुख-सुविधाएं बढ़ेगी। परिवार में महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी।

मकर
घर-परिवार के कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। अनावश्यक धन खर्च होगा। मन में असंतोष बना रहेगा। समय अनर्गल कार्यों में खराब हो सकता है।

मिथुन
परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी।

तुला
परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। नये-पुराने मित्रों से मुलाकात हो सकती है। परिजनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक वार्ता के लिए दिन अच्छा रहेगा।

कुंभ
आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। मनोबल-आत्मविश्वास बढ़ेगा।

कर्क
व्यक्तिगत परेशानियों से राहत मिलेगी। अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। विवादित मामलों का निपटारा हो सकता है। व्यावसायिक कार्यों के संबंध में सोच-विचार हो सकता है।

वृश्चिक
व्यावसायिक कार्यों से संबंधित आर्थिक समस्या का समाधान हो सकता है। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त होगा। आय में वृद्धि होगी। व्यक्तिगत प्रयासों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे।

मीन
नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक स्थिति ठीक रहेगी। नवीन कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। शुभ कार्य के लिए यात्रा संभव है।